सैन्धव सभ्यता का पतन

A- पुरातात्विक साक्ष्य

1- हड़प्पा संसकृति के प्राचीन अवशेषों के अध्ययन से यह पता चलता है कि अपने अस्तित्व के अंतिम चरण में यह सभ्यता पतनोन्मुखी रही

2. हड़प्पा संसकृति लगभग 1900 BC तक जीती जागती रही बाद में इसकी नागरिक व्यवस्था लुप्त सी हो गयी जिसके परिचायक थे सुव्यवस्थित नगर निवेश, व्यापक तौर की संरचनाएं, लेखन कला, मानक बाट माप, दुर्ग नगर, और निम्न स्तरिय शहर के बीच अन्तर, कांसे के औजारो का इस्तेमाल और काले रंग की आकृतियों से चित्रित लाल मृदभांड का निर्माण। इसकी शैलीगत एकरूपता समाप्त हो गयी और शैली में भारी विविधता आ गयी।

3. हड़प्पा मोहनजोदड़ो और कालीबंगा जैसे नगरो का नगरनियोजन और निर्माण में क्रमिक ह्रास हुआ पुरानी जिर्ण ईंटो से बने और घटिया निर्माण वाले घरो ने नगरो की सड़को और गलीयों पर कब्जा कर लिया पतली विभाजक दिवारों से घरो के आंगन का उपविभाजन कर दिया गया शहर बडी तेजी से तंग बस्तियों में बदल रहे थे मोहनजोदड़ो के वास्तुकला के विस्तृत अध्ययन से पता चलता है कि विशाल स्नानागार की अनेक प्रवेश मार्ग अवरुद्ध हो गये थे कुछ समय बाद "विशाल स्नानागार" और "अन्न भण्डार" का उपयोग पूर्णत: समाप्त हो गया उसी समय मोहनजोदड़ो में अपेक्षाकृत बाद के निवास स्थानों मे मुर्तियों और लघु मुर्तियों, मनकाओं, चुडीयो इत्यादि की संख्या मे स्पष्ट कमी देखी है अंत मे मोहनजोदड़ो नगर मुलत: 85 हेक्टेयर से सिकुड़कर मात्र तीन हेक्टेयर की छोटी सी बस्ती रह गया।

4. हड़प्पा के परित्याग से पहले लगता है कि एक और जन समुह आया था जिसकी जानकारी हमे उनकी मुर्दो को दफनाने के पद्धती से चलता है।

वे मिट्टी के जीन बर्तनों का इस्तेमाल करते थे वे बर्तन हड़प्पा निवासियों के बर्तनों से भिन्न थे उनकी संस्कृति को सिमेट्री एच (कब्रिस्तान एच) संस्कृति कहा जाता है।

5. कालीबंगा और चान्हुदड़ो जैसे स्थानों मे भी ह्रास की प्रक्रिया स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। हम देखते है कि शक्ति और विचारधारा से सम्बन्ध और महत्ता प्रदर्शन के समान अधिक से अधिक दुर्लभ हो रहे थे बाद के हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो जैसे नगरों का पूर्ण परित्याग हो गया।

6. बहावलपुर क्षेत्र मे हड़प्पा कालिन और प्रवर्ती ह० कालीन स्थानों के शहरी नमुने के अध्ययन से भी ह्रास की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। नदी के हाकड़ी तटों के साथ परिपक्व काल में जहाँ 174 बस्तीयां थी, वहाँ उत्तरवर्ती हड़प्पा काल में बस्तियों की यह संख्या घटकर 50 रह गयी इस बात की सम्भावना है कि अपने जिवन के बाद के 2,300 वर्षों में ह० सभ्यता के मुख्य प्रदेशों के बस्तियों का ह्रास हो रहा था जन समूह या तो नष्ट हो गये थे या अन्य क्षेत्रों में चले गये थे।

7. जहाँ ह० बहावलपुर और मोहनजोदड़ो के त्रिभुज मे बस्तियों की संख्याओं मे ह्रास हुआ वही गुजरात, पूर्वी पंजाब, हरियाणा और उपरी दोआब के दूरस्थ क्षेत्रों में। बस्तियों की संख्या मे बढ़ोत्तरी हुई इससे इन क्षेत्रों में लोगों की संख्या मे अपूर्व वृद्धि का संकेत मिलता है इन क्षेत्रों की जनसंख्या में आकस्मिक वृद्धि का कारण ह० के मुख्य क्षेत्र से लोगों का आना हो सकता है।

8. ह० सभ्यता के दूरस्थ क्षेत्र मे जैसे जेराफ, राजस्थान और पंजाब के प्रदेश मे लोग रहते रहे लेकिन उनके जिवन में परिवर्तन आ गया था ह० सभ्यता से सम्बन्ध कुछ महत्वपूर्ण लक्षण जैसे लेखन तौलने के समान बाट, ह०कालीन मिट्टी के बर्तन और वास्तुकला शैली लुप्त हो गये थे।

9. सिन्धु नदी के नगरों का परित्याग स्थूल रूप से 1800 BC में हुआ इस तारिख का समर्थन इस तथ्य से होता है कि मेसोपोटामिया साहित्य में 1900 BC के उपरान्त (Meluha) का उल्लेख समाप्त हो गया था तथापि आज भी हड़प्पा कालीन नगरों के अन्त का कालानुक्रम स्थायी नहीं है हम आज तक नहीं जान सके की मुख्य बस्तियों का परित्याग एक ही समय हुआ अथवा भिन्न भिन्न अवधियों मे हुआ तथापि यह अवश्य निश्चित है कि मुख्य नगरों के परित्याग और अन्य बस्तियों के विनगरीकरण से हड़प्पा सभ्यता के ह्रास का संकेत मिलता है

=